संधि एवम् उसके प्रकार

प्र० संधि से क्या समझते हैं? उसके प्रकारों का उदाहरण वर्णन कीजिए।

उ० → संधि की परिभाषा:
दो वर्णों के मेल से, जो विकार उत्पन्न होता वही विकार को संधि कहते हैं।

जैसे :- इंगिय + होगार = इंगियागार (इंगिताकार)
महाराअ + अहिराजो = महारायाहिराजो (महाराजाधिकार)

संधि के प्रकार : प्राकृत व्याकरण के अनुसार संधि के तीन प्रकार हैं :-

(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि और (3) अव्यय संधि

(1) स्वर संधि → दो अत्यंत निकट स्वरों के मिलने से ध्वनि में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

जैसे :- नर + अहिवा > नराहिवा (नराधिपा)
दंड + अहीसो > दण्डाहीसो (दंडाधीशः)
दिण + ईसो > दिणेसो (दिनेशः)
गूढ + उअरं > गूढोअरं (गूढोदरम्)

(2) व्यंजन संधि → व्यंजन वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे : धणं + एव = धणमेव (धनमेव)
किं + एअं = किमेअं (किमेतम्)
विज्जा + आलअ = विज्जालअ (विद्यालय)
विज्जा + अत्थी = विज्जात्थी (विद्यार्थी)

(3) अव्यय संधि : अव्ययों के पदों के परस्पर में संधि होने को, अव्यय संधि कहते हैं।

जैसे :- केण + अपि = केणावि (केनापि)
किं + अवि = किमवि (किमपि)
चंदो + व्व = चंदोव्व (चंद्रव्य)
तहा + इति = तहत्ति
तहा + इति = तहत्ति

नोट : अव्यय → जिस शब्द के रूप, अर्थ में कभी भी विकार या परिवर्तन नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं। (... नाहड)